Date :- 07/07/2020	Degree Part-I (Hons.
Content Writer :-	Content of the paper:
Dr. Akhay Kumar Pathak	Micro Economics
Dept. of Economics,	Module-6
Marwari College,	Paper-2
Darbhanga (LNMU)	

TOPIC :- RELEVANCE AND IMPORTANCE OF WELFARE ECONOMICS (कल्याणकारी अर्थशास्त्र का महत्व एवं प्रासंगिकता)

कल्याणकारी अर्थशास्त्र आर्थिक सिद्धांत की एक विशिष्ट शाखा है। अर्थशास्त्र के इस शाखा के अंतर्गत इस तथ्य का अध्ययन किया जाता है कि "अर्थव्यवस्था में या विभिन्न प्रकार की आर्थिक नीतियां लागू की जाती है, उनसे समाज के लोगों का सामाजिक हित में वृद्धि होती है या नहीं। इस प्रकार इसके अंतर्गत सामाजिक कल्याण की कसौटी पर विभिन्न प्रकार की आर्थिक नीतियों का मूल्यांकन किया जाता है।

आर्थिक सिद्धांत के दो महत्वपूर्ण पहलू के रूप में वास्तविक विज्ञान एवं आदर्शात्मक विज्ञान की व्याख्या की जाती है। आदर्शात्मक विज्ञान के रूप में अर्थशास्त्र किसी आर्थिक क्रिया या नीति के अच्छाई या बुराई के विषय में मूल्यगत विचार करता है। वास्तव में अर्थशास्त्र का आदर्शात्मक पहलू ही कल्याणकारी अर्थशास्त्र का आधार है।

कल्याणकारी अर्थशास्त्र का वर्तमान स्वरूप में तीव्र गति से विकास हुआ है। उपयोगितावादी विचारक प्रो० बेंथम पहले अर्थशास्त्री थे जिन्होंने 'अधिकतम लोगों का अधिकतम सुख' का नारा देकर कल्याणकारी अर्थशास्त्र की नींव डाली। लेकिन प्रो० ए० सी० पीगू ने कल्याणकारी अर्थशास्त्र के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया। प्रो० पीगू ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'Economics of Welfare' के माध्यम से कल्याण की अवधारणा का वैज्ञानिक विश्लेषण किया तथा कल्याणकारी अर्थशास्त्र को एक विशेष शाखा के रूप में मान्यता दिलायी। इसलिए प्रो० पीगू को "कल्याणकारी अर्थशास्त्र का जनक" भी कहा जाता है। इसके पश्चात काल्डोर, हिक्स, पेरेटो, सैम्युलसन, ग्राफ, ईडर आदि अर्थशास्त्रियों ने कल्याणकारी अर्थशास्त्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। कल्याणकारी अर्थशास्त्र, अर्थशास्त्र

Maharaza

की वह शाखा है जिसमें आर्थिक नीतियों का विश्लेषण मुख्य रूप से समाज के कल्याण को अधिकतम करने के दृष्टि से किया जाता है। अतः हम कल्याणकारी अर्थशास्त्र को परिभाषित करते हुए हम कह सकते हैं कि " कल्याणकारी अर्थशास्त्र आर्थिक विज्ञान की वह शाखा है जिसका संबंध मुख्यतः ऐसी कसौटियों का प्रतिपादन करना है जिनके आधार पर नीतियों का विकास करके सामाजिक कल्याण को अधिकतम बनाया जा सके। प्रो० रेडर ने इसे परिभाषित करते हुए कहा है कि " कल्याणकारी अर्थशास्त्र, आर्थिक विज्ञान की वह शाखा है जो आर्थिक नीतियों के लिए औचित्य के मानदण्ड की स्थापना तथा प्रयोग करने का प्रयत्न करती है।"

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि कल्याणकारी अर्थशास्त्र, आर्थिक सिद्धांत की वह शाखा है जो कि मुख्यतया वैकल्पिक नीतियों की सामाजिक वांछनीयता के मूल्यांकन से संबंधित होती है।

कल्याणकारी अर्थशास्त्र के उद्देश्य :—

कल्याणकारी अर्थशास्त्र के प्रादुर्भाव के निम्नांकित उद्देश्य हैं :—

(I) यह आर्थिक कल्याण को अधिकतम करने वाले उपायों एवं साधनों का अध्ययन करता है। यहां आर्थिक कल्याण से तात्पर्य उस संतुष्टि से है जो समाज के व्यक्तियों को विभिन्न सेवाओं के उपभोग से प्राप्त होता है।

(II) यह उन स्थितियों का बतलाता है जिनके द्वारा यह मालूम होता है कि एक वातावरण में दूसरे वातावरण की अपेक्षा व्यक्ति अधिक या कम या बराबर संतुष्ट हैं।

(iii) यह उन दशाओं को भी बताता है जिनके द्वारा हम मान सकते हैं कि सम्पूर्ण समाज का आर्थिक कल्याण एक समयावधि में, दूसरी समयावधि की अपेक्षा घटा या बढ़ा है।

(iv) प्रो० लिटिल के अनुसार कल्याणकारी अर्थशास्त्र का संबंध नैतिक निर्णयों से होना आवश्यक है।

वास्तविक अर्थशास्त्र एवं कल्याणकारी अर्थशास्त्र में अन्तर :-

(i) वास्तविक अर्थशास्त्र आर्थिक क्रियाओं के कार्य-कारण संबंध को बताता है, वहीं कल्याणकारी अर्थशास्त्र आर्थिक नीतियों का विश्लेषण करता है।

(ii) वास्तविक अर्थशास्त्र का संबंध वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्य निर्धारण से है, वहीं कल्याणकारी अर्थशास्त्र का संबंध केवल मूल्य निर्धारण से ही नहीं वरन् इसके उत्पादन एवं वितरण से है जिस पर आर्थिक कल्याण निर्भर करता है।

(iii) वास्तविक अर्थशास्त्र के अंतर्गत हम सिद्धांतों की जाँच निकाले गए निष्कर्षों के आधार पर करते हैं, तो कल्याणकारी अर्थशास्त्र के सिद्धांतों की जाँच इनकी मान्यताओं के आधार पर करते हैं।

(iv) वास्तविक अर्थशास्त्र में इकाई अथवा पूर्ण अर्थव्यवस्था का अध्ययन किया जा सकता है अर्थात् विशिष्ट अथवा सामान्य आर्थिक विश्लेषण को प्रयोग किया जा सकता है, वहीं कल्याणकारी अर्थशास्त्र में व्यक्ति एवं समाज, दोनों का अध्ययन किया जा सकता है किन्तु इसके लिए समाज के कल्याण का अध्ययन अधिक महत्वपूर्ण है।

Maharaza